जीवन का एक अनुभव

प्रदीप कांति सरकार, वरिष्ठ शोध सहायक
राजसं. क्षेत्रीय केंद्र,गुवाहटी

गुवाहटी, भारतवर्ष के मानचित्र में पूर्वोत्तर क्षेत्र का एक प्रमुख महानगर है । प्रकृति ने यहाँ अपने रूप को पूर्ण विकसित किया है । यहाँ की नदियाँ और प्रकृति अत्यन्त रमणीय है । पूर्वोत्तर के किसी भी प्रान्त में जाने पर प्रकृति का यह मनमोहक रूप देखने को अवश्य मिलेगा । इस क्षेत्र का एक महानगर शिलांग, जिसे पूर्व का स्विटजरलैण्ड भी कहा जाता है, गुवाहटी से करीब तीन घंटे के सफर की दूरी पर स्थित हैं । शिलांग से चेरापूंजी तक भ्रमण जीवन का एक अनमोल अनुभव है। अरूणांचल प्रदेश के बमडिला, तवांग, ईटानगर, पासीघाट आदि शहरों में एक बार जाने पर ऐसा एहसास होता है कि बार-बार वहाँ की प्रकृति आपको बुला रही है ।

प्रकाश एक प्रकृति प्रेमी व्यक्ति है । वह सदा हरे भरे क्षेत्र को ही अपनी कर्मभूमि के रूप में चुनना पसंद करता है । प्रकाश को ऐसा अनुभव हुआ कि जल प्रकृति की एक आश्चर्यजनक वस्तु है। नदियों की बहती हुई धारा, वर्षा की रिमझिम बूंदे, सागर में सीमाहीन जलराशि, उसमें उठती हुई तरंगें, पहाड़ों से गिरते हुए झरने, जलप्रपात आदि सारी खूबियाँ उसे अपनी ओर आकर्षित करती हैं । इसलिए उसने अन्य विभागों को छोड़कर जल संबंधी एक वैज्ञानिक संस्थान को अपना कर्म क्षेत्र बनाया ।

स्कूल कॉलेज की शिक्षा सम्पूर्ण करने के बाद उसने बड़ी ही ईमानदारी से अपना कर्म जीवन आरम्भ किया, जिसमें साम्प्रदायिकता या प्रादेशिकता का कोई स्थान नहीं रहा। प्रकाश ने जहाँ-जहाँ काम किया उसे ऐसा लगा कि बहुत ही कम लोगों को अच्छा निर्देशन या प्रशिक्षण मिल पाता है जिससे वे अपने आपको व कर्म पद्धति को विकसित कर सके । कहीं-कहीं उसे यह भी नजर आया कि लोग एक दूसरे की सज्जनता का गलत इस्तेमाल करना चाहते हैं । जिन्दगी की भाग-दौड़ में कौन किसको शिकंजे में फंसायेगा, जैसे इसी की ही प्रतिस्पर्धा चलती रहती है । जिसमें आवेग, अपनापन, सहज सरल हृदय में कुछ बोलना, हँसना किसी को विपत्ति में सहयोग देना एक-दूसरे के लिए सहानूभूति, जैसी चीजों का कोई मूल्य ही नहीं है ।

प्रकृति के आंचल में पला हुआ प्रकाश आज यह सब देखकर अचंभित हो गया । उसे ऐसा महसूस होने लगा कि अगर ऐसे ही सब कुछ चलता रहा तो एक दिन जिंदगी का सही अर्थ ही खो जायेगा, लकिन उसे यह उम्मीद भी है कि एक दिन सब कुछ ठीक हो जायेगा, इसलिए वह किसी पर दोषारोपण नहीं करता । प्रकाश अपने आप को यह बात समझाने का प्रयास करता है कि उसके जैसे और लोग भी जिन्दगी के हर क्षेत्र में जूझ रहे है । घर से बाहर निकलकर रहने के लिए घर की तलाश करना, न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वेतन का एक बड़ा हिस्सा निकालना पड़ता है जो कि निर्धारित मकान किराया भत्ता से कहीं ज्यादा होता है । कई सारी समस्याओं को लेकर एक-एक दिन गुजारना पड़ता है । शुद्ध जल की समस्या से सभी को जूझना पड़ता है । कुछ ही स्थानों पर शुद्ध पानी पिया जाता है। बाकी कुछ स्थानों पर पानी में आइरन की मात्रा इतनी

ज्यादा है कि पानी का रंग देखते ही अनुमान हो जाता है कि इस पानी का उपयोग किसी भी काम मे नहीं किया जा सकता है।

सभी चाहते है कि आने वाला समय सबके लिए सुखमय हो। इसलिए विश्वभर में जल संसाधन विकास पर विशेष ध्यान दिया गया है । ताकि भविष्य में जल संबंधी समस्याऐं खड़ी न हों। इसी प्रकार दुनिया भर में सभी क्षेत्र में विशेष परिवर्तन लाया जा रहा है । मानव संसाधन विकास विभाग इस काम में सक्रिय भूमिका निभा रहा है । फिर भी सब कुछ देखते हुए हम भूल जाते हैं कि इन सबके पीछे हमारा मात्र एक लक्ष्य है, एक बेहतर जिंदगी विताना, जो सभी की भलाई के लिए है । लोकिन इसका अर्थ यह नहीं कि बेहतर जिंदगी बिताने के लिए हम एक-दूसरे को दुख पहुँचाएं, आपस में दंगा-फसाद करें।

प्रकाश आज जिंदगी की सूझ-बूझ में थक गया है । उसे ऐसा लगता है कि वह एक अनोखी दुनिया में बस रहा है । लेकिन उसके मन में यह आशा है कि जिंदगी में थोड़ी सी रोशनी, ताजी हवा, मिट्टी से निकलती हुई सोंधी खुशबु, प्रकृति को देखने- समझने की इच्छा शायद मन का बोझ हल्का करे और जीवन को अच्छी दिशा देने में सहायक हो सके।

वि.द्र. –इस कहानी का चरित्र काल्पनिक है ।

***